प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय
कुलपति
Prof. Akhilesh Kumar Pandey
Vice Chancellor

विक्रम विश्वविद्यालय
नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त
उज्जैन (म.प्र.) 456010 भारत
दूरभाष : 0734-2514270 (कार्यालय)
: 0734-2511071 (निवास)
फेक्स : 0734-2514276

VIKRAM UNIVERSITY
Accredited 'A' Grade by NAAC
Ujjain - 456010 (M.P.) India
Phone : 0734-2514270 (Off.)
: 0734-2511071 (Res.)
Fax : 0734-2514276
E-mail : vcvikramujn@gmail.com
Website : www.vikramuniv.ac.in

क्रमांक : 237/कुल. का./2022

दिनांक : 04.09.2022

प्रिय शिक्षकवृंद,

ज्ञानदान के लिए समर्पित एवं शिक्षा कर्म को अपने जीवन का लक्ष्य मानने वाले शिक्षकों के विशेष दिवस 'शिक्षक दिवस' एवं 'शिक्षक पर्व' पर आप सहित संस्था के समस्त शिक्षकों को हार्दिक बधाइयाँ एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

ज्ञान संसार का सर्वोपरि उष्कृष्ट और पवित्र तत्व है। ज्ञान के लिए गीता में कहा गया है 'इस संसार में ज्ञान के समान और कुछ भी पवित्र नही है।' ज्ञान ही जीवन का सार है, ज्ञान आत्मा का प्रकाश है जो सदा एकरस एवं बन्धनों से मुक्त रहने वाला है। ज्ञान विद्या जीवन का बहुमूल्य धन है। उचित शिक्षा सभी के लिए आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने की एक मात्र मूल्यवान संपति है जो मनुष्य प्राप्त कर सकता है। यह हममें आत्मविश्वास विकसित करने के साथ ही हमारे व्यक्तिव निर्माण में भी सहायक है। प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति में गुरु का महत्व रहा है, भारतीय संस्कृति में गुरू को 'गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है, गुरु ही साक्षात परब्रह्मा है' माना गया है।

किसी भी देश में शिक्षक के भविष्य का विकास शिक्षकों के हाथ में होता है। एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी के जीवन को गढ़ता है शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। भविष्य के देश निर्माताओं को एक आदर्श नागरिक बनाने का दायित्व शिक्षकों को एक अलग सम्मान दिलाती है।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी ने अपने जन्मदिवस को शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की जो प्रेरणा दी है यह अपने आप में शिक्षक दिवस के महत्व को दर्शाता है। वे भारतीय शिक्षक के आदर्श है। अपने ज्ञान और विद्वता के कारण ही उन्हें समाज में यह स्थान प्राप्त हुआ। हमें ऐसे शिक्षकों को अपना आदर्श मानकर जीवन में आगे बढ़ने की आवश्यकता है। शिक्षक समाज में सांस्कृतिक और जीवन मूल्यों का वाहक होता है इसलिए समाज शिक्षक को हमेशा सम्मान की दृष्टि से देखता है।

विश्वविद्यालय एवं इससे सम्बद्ध समस्त महाविद्यालयों को शिक्षको की लगन और परिश्रम के कारण ही विक्रम विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आप सभी के कारण इस विश्वविद्यालय ने ए ग्रेड विश्वविद्यालय बनने का गौरव प्राप्त किया तथा मध्यप्रदेश में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू करने वाला पहला विश्वविद्यालय बना। शिक्षा शोध, खेल, विज्ञान एवं तकनीकी तथा संस्कृति में इस विश्वविद्यालय को विश्वस्तर पर पहचान दिलवाई।

प्रसन्नता की बात है कि मध्यप्रदेश ने गुणवत्तायुक्त शिक्षा के विकास के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में मध्यप्रदेश पहला राज्य बन गया है। ऐसे में हम सबका दायित्व है कि शिक्षा से जुड़े सभी पक्ष एकजुट होकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के लिये समग्र प्रयास करें। कोविड 19 संकट के बाद के दौर में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के केन्द्रों में नया उत्साह, नई ऊर्जा जाग्रत करते हुए आप सभी ने अध्यापन और अनुसंधान में विद्यार्थियों को नव मार्गदर्शन किया जो सराहनीय है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उभरे नए मानदण्डों को साकार करते हुए इस दिशा में सफलता प्राप्त की जा सकती है

निरन्तर 2

और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है।

उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में गुणात्मक विकास की दिशा में व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं। जरूरी है कि मानव संसाधन विकास को दृष्टिगत रखते हुए उच्च शिक्षा परिसरों से जुड़े सभी पक्ष व्यापक योगदान देने के लिये तत्पर हों। नवीन परिवेश में कक्षा अध्यापन निरंतर एवं सुचारु रूप से हो। समस्त शिक्षक पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ नई पीढ़ी के निर्माण के संकल्प को साकार करें। किसी भी शैक्षणिक संस्था में अद्यतन पाठ्य सामग्री से सम्पन्न पुस्तकालय महत्वपूर्ण आधार होते हैं। वहाँ पाठ्यपुस्तकों के साथ ही पर्याप्त संदर्भ–ग्रन्थ एवं पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध हों।

विद्यार्थियों को शैक्षिकेतर गतिविधियों में अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित करने के पर्याप्त मौके उपलब्ध कराए जाएं। खास तौर पर उन्हें सामाजिक जिम्मेदारी के साथ विविधायामी गतिविधियों से जोड़ने की कोशिश हो, जिसका लाभ समग्र समाज और राष्ट्र निर्माण में प्राप्त हो सकेगा। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव को मनाते हुए छात्रों में राष्ट्रहित सर्वोपरि की भावना जागृत करना हमारा लक्ष्य बने, यह जरूरी है। हमारे छात्र सही अर्थों में सम्यक् विकास की संकल्पना को साकार करने के लिए सहभागी सिद्ध हो सकते हैं।

शिक्षकगण स्वयं तो अभिप्रेरित हों ही, छात्रों को भी निरंतर अभिप्रेरित करें। वे विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में अपनी विलक्षण भूमिका निभा सकते हैं। शैक्षिक परिसरों में आज शिक्षक–अभिभावक–विद्यार्थी सम्बन्ध को सुदृढ़ करते हुए उनके बीच निरन्तर संवाद का वातावरण बनाने की आवश्यकता है, इससे प्रतिभाओं को सही दिशा दी जा सकेगी। वर्तमान सत्र के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा घोषित अकादमिक कैलेन्डर के अनुरूप समस्त अकादमिक तथा परीक्षा संबंधी कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किये जाने के लिये हम संकल्पित हैं। इस हेतु आप सभी का सार्थक सहयोग आवश्यक है।

वर्तमान में विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा लगभग 200 नवीन पाठ्यक्रम प्रारंभ किए है और पाठ्यक्रमों की संख्या 255 से अधिक हो गई है। इनमें रोजगारोन्मुखी दृष्टि को ध्यान में रखा गया है। शिक्षा की प्रासंगिकता तभी है, जब वह संस्कारशील बनाए। साथ ही व्यक्ति को जीवन में सफल और आत्मनिर्भर बनाने में योगदान दे। शिक्षा की सार्थकता विद्यार्थी को सब प्रकार के भेदभाव और बंधनों से ऊपर उठा कर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में योगदान देने में है। श्रेष्ठ मूल्यों का आचरण करके ही हम नई पीढ़ी को आदर्श मूल्यों की शिक्षा दे सकते हैं।

वर्तमान विश्व में भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए प्रौद्योगिकीय उन्नति और तेजी से बढ़ती स्पर्धा के बीच सर्वांगीण प्रयत्न करने होंगे। अध्ययन–अध्यापन और शोध में अधुनातन तकनीक का कारगर उपयोग करने में हमें तत्पर होना होगा। मेरा आग्रह है कि हम अपने शैक्षिक परिसरों में नवीनतम सूचना प्रौद्योगिकी का समुचित लाभ लेने के लिये वातावरण बनाएँ।

आप सभी के सहयोग से नये शैक्षिक परिवेश में विद्यार्थियों को ज्ञान सम्पन्न, विनयी और आत्मनिर्भर बनाकर हम श्रेष्ठ मनुष्य तैयार कर सकेंगे, ऐसा विश्वास है। आदर्श विद्यार्थियों के माध्यम से समाज और राष्ट्र के रचनात्मक वातावरण बन सकेगा।

इन्हीं आशाओं और शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय,

(प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय)